भजन

तर्ज–अगर पंजे वाले की

अर्श किया तुमने दिल को हमारे,
कैसे कहें पिया हमसे जुदा हैं
बैठक लगाई रूहों के दिल में,
ये महबूब मेरे हमपे फिदा हैं

1–खिलवत खाने में इश्क रब्द की,
बातें हुईं थी जो सब याद कराईं
अर्श खजाना सब ले आए,
मेहरों के सागर बड़े मेहरबान हैं

2–भरके सुराही इश्के हकीकी,
लेके पधारें हैं मस्ती लुटाने
खड़े क्यूं हो दिलबर बैठो,
बिठाओ आगोश में,हम बड़े गमजदा हैं

3–इतनी पिला दो कि मैं मैं रहूं न,
तुम ही हो सामने,तुम ही हो जाऊं
एक सरूप हो जायें इश्क में,
रंग मारफत का चढ़ता जहां है